आर्थिक विकास के धरातल पर मानव विकास–एक विश्लेषण

डा0 नंदिता
एसोसिएट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र)
इलाहाबाद डिग्री कालेज,
संघटक महाविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज।

सारांश

मानव विकास इस मान्यता पर आधारित है कि किसी राष्ट्र के नागरिक ही उसकी सबसे बड़ी और वास्तविक सम्पत्ति है। किसी देश के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उत्थान में, उस देश में उपलब्ध मानव संसाधन अथवा आर्थिक रूप में क्रियाशील जनसंख्या की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः मानव विकास ही आर्थिक विकास का लक्ष्य है। हम सही मायने में उन्हीं विकास कार्यों को सार्थक मान सकते हैं जो लोगों के जीवन को स्वस्थ्य एवं दीर्घायु बनाकर सृजनात्मक क्षमताओं को निखारने का मौका दे सकें। मानव शक्ति का आकार तथा उसका गुणात्मक स्वरूप देश के विकास की दशा एवं विकास के पथ को निर्धारित करती है। मानव ही उत्पादन का साधन बन कर आर्थिक विकास को गति प्रदान करता है। मानव विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वस्थ जीवन, शिक्षा और अच्छे जीवन स्तर को पाना है जिसमें राजनैतिक आज़ादी, मानवाधिकार का विचार और आत्म–सम्मान एक सहयोगी तत्व है। अतः मानव विकास, लोगों के विकल्पों में विस्तार के साथ–साथ प्राप्त होने वाले कल्याण के स्तर को ऊँचा करने की प्रक्रिया है। यह लेख भारत के मानव विकास पर प्रकाश डाल रहा है।

प्रस्तावना :

वर्तमान भूमण्डलीकृत विश्व में बहुआयामी विकास की दौड़ हेतु सारी ऊर्जा 'मानव संसाधन' की परिधि से ही अभिसरित होती है। संपोषणीय विकास हेतु आज प्रत्येक राष्ट्र अपे विकास में आर्थिक मापदण्डों के साथ अन्य पहलुओं के विकास पर भी ध्यान दे रहे हैं, जिनका उद्देश्य प्रमुखतः मानव संसाधन एवं मानव विकास के ओर हैं जिनका उद्देश्य प्रमुखतः मानव संसाधन का विकास है। यहाँ उल्लेखनीय है कि भारत जनांकिकी लाभांश वाला देश है और किसी भी देश की जनसंख्या का कितना अधिक हिस्सा शिक्षित, कुशल एवं प्रशिक्षित, होकर रोजगार में लगा हुआ है, वह देश उतना ही तेजी से विकास करेगा। आर्थिक विकास की दृष्टि से भौतिक पूँजी की अपेक्षा मानव पूँजी को कहीं अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है क्योंकि मानवीय साधनों की कुशलता एवं दक्षता पर ही आर्थिक विकास का ढाँचा खड़ा किया जा सकता है। यही कारण है कि आज अधिकांश विकासवादी अर्थशास्त्री इस बात के पक्षधर है कि मानव–पूँजी में अधिक से अधिक विनियोग किया जाना चाहिए ताकि आर्थिक विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक मानव संसाधन का समुचित विकास किया जा सके।

मानव विकास के सूचक :

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री महबूब उल हक जिनके निर्देशन में सर्वप्रथम मानव विकास सूचकांक का निर्माण किया गया उनके साथ मिलकर नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो0 अमर्त्यसेन वह अर्थशास्त्री थे जिन्होंने मानवी विकास के पहलू पर सर्वाधिक चिंतन किया और विश्व का ध्यान इस तरफ खींचा। मानव विकास एक वृहद् अवधारणा है जिसके अन्तर्गत विभिन्न सामाजिक–आर्थिक व राजनीतिक तत्व आते हैं। किन्तु UNDP ने मानव विकास के मुख्यतः तीन सूचक बतायें हैः–

1. जीवन प्रत्याशा अर्थात् एक विस्तृत और स्वस्थ जीवन। जिस देश के नागरिकों की औसत आयु जितनी अधिक होगी वह देश उतना ही अधिक विकसित समझा जायेगा।

2. ज्ञान अर्थात् एक देश में विभिन्न शिक्षण संस्थानों में नामांकन कराने वाले लोगों की संख्या। किसी देश में बालिग साक्षरता दर और समग्र प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च नामांकन के अनुपात के द्वारा इसको मापा जाता है।

3. आर्थिक विकास अर्थात् प्रति व्यक्ति आय। लोगों का आर्थिक विकास मानव विकास का एक अन्य सूचक है जो लोगों का अच्छा जीवन स्तर दर्शाता है। एक देश में लोगों की प्रति व्यक्ति आय जितनी अधिक होगी उस देश में मानव–विकास उतना ही अधिक होगा।

भारत का HDI :

मानव विकास रिपोर्ट 2018 के अनुसार कुल 189 देशों में भारत 130वें स्थान पर आता है 1917 में भारत का मानव विकास निर्देशांक का मूल्य 0.64 रहा जो दुनियां के देशों में मध्यम श्रेणी के देशों में आता है। 1990 में भारत का मानव मूल्य निर्देशांक 0.427 रहा अर्थात भारत का HDI मूल्य 1990 और 2017 के बीच लगभग 50 प्रतिशत बढ़ा। यह संकेत गरीबी से बाहर निकालने की दशा में भारत का उल्लेखनीय प्रगति का संकेत है।

INDIA'S HDI TRENDS

	Life expectancy at birth	Expected years of schooling	Mean years of schooling	GNI per capita (2011 PPP$)	HDI value
1990	57.9	7.6	3.0	1733	0.424
1995	60.4	8.2	3.5	2015	0.460
2000	62.6	8.3	4.4	2470	0.493
2005	64.6	9.7	4.8	3157	0.535
2010	66.6	10.8	5.4	4357	0.581
2015	68.3	12.	6.3	5691	0.627
2016	68.6	12.3	6.4	6026	0.636
2017	68.8	12.3	6.4	6353	0.640

Source: UNDP, Global Data Lab, Green Shade Indicate Social Exp.

भारत में जीवन प्रत्याशा :

जीवन प्रत्याशा (लाइफ एक्सपेक्टंसी) के मामले में भारत की स्थिति बेहतर हुई है। 1990 से 2017 के बीच भारत में जन्म के वक्त जीवन प्रत्याशा में करीब 11 सालों की बढोतरी हुई है। भारत में जीवन प्रत्याशा 68.8 साल है जबकि 2016 में यह 68.6 साल और 1990 में 57.9 साल थी। लैंगिक आधार पर अगर जीवन प्रत्याशा की बात करें तो भारत में महिलाओं की जीवन प्रत्याशा पुरुषों से ज्यादा है। महिलाओं की जीवन प्रत्याशा जहां 70.4 वर्ष है, वहीं पुरुषों की जीवन प्रत्याशा 67.3 वर्ष है।

इयर्स ऑफ स्कूलिंग में इजाफा :

इयर्स ऑफ स्कूलिंग में इजाफा भारत में स्कूल जाने की उम्र वाले बच्चों के स्कूलों में और ज्यादा वक्त रहने की संभावना बढ़ी है। रिपोर्ट के मुताबिक आज भारत में बच्चों के स्कूल में रहने की संभावित समयावधि 1990 के मुकाबले 4.7 साल ज्यादा है। इस बार भारत में संभावित इयर्स ऑफ स्कूलिंग 12.3 वर्ष है। पिछली बार भी यह 12.3 वर्ष थी जबकि 1990 में यह 7.6 वर्ष थी।

ग्रॉस नेशनल इनकम (GNI) में इजाफा :

इस बार 2017 में भारत की प्रति व्यक्ति ग्रॉस नेशनल इनकम 6353 डॉलर (करीब 455986 रूपये) है, जो पिछली बार (साल 2016 से) 327 डॉलर (करीब 23470 रूपये) ज्यादा है। 1990 से 2017 के

बीच भारत के प्रति व्यक्ति GNI में 266.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। 1990 में भारत की पर कैपिटा ग्रॉस नेशनल इनकम (GNI) 1733 डॉलर (करीब 124386 रूपये) थी।

राज्य स्तर पर HDI :

भारतीय राज्य अभिदृश्य में मानवी विकास में भारी असमानता विद्यमान है, भारत में कई ऐसे राज्य हैं जो HDI के दृष्टिकोण से काफी ऊपर है जैसे–केरल, गोवा, पंजाब, हरियाण कुछ राज्य बहुत पीछे हैं–उड़ीसा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश।

HDI for Sate of India 2017

Improvement in HDI across State					
State	1990		2017		Change (2017 over 1990)
	Index	Rank	Index	Rank	
Haryana	0.46	13	0.70	6	7
Himachal Pradesh	0.48	10	0.72	4	6
Tamil Nadu	0.47	11	0.70	7	4
Karnataka	0.44	16	0.68	12	4
Punjab	0.49	6	0.72	3	3
Arunachal Pradesh	0.43	18	0.65	15	3
Rajasthan	0.40	22	0.62	20	2
Kerala	0.54	2	0.77	1	1
Andhra Pradesh	0.42	19	0.64	18	1
Odisha	0.40	23	0.60	22	1
Goa	0.55	1	0.75	2	-1
Maharashtra	0.49	8	0.69	9	-1
Tripura	0.44	15	0.65	16	-1
Assam	0.41	20	0.61	21	-1
Sikkim	0.54	3	0.71	5	-2
Jammu & Kashmir	0.49	9	0.68	11	-2
Gujarat	0.47	12	0.67	14	-2
West Bengal	0.44	17	0.63	19	-2
Madhya Pradesh	0.40	21	0.60	23	-2
Mizoram	0.52	5	0.70	8	-3
Manipur	0.49	7	0.69	10	-3
Meghalaya	0.45	14	0.65	17	-3
Nagaland	0.53	4	0.67	13	-9
Uttar Pradesh	0.39	24	0.59	24	0
Bihar	0.38	25	0.57	25	0
All India	0.43	-	0.64	-	-

Source : SBI Research, UNDP, Global Data Lab Green Shade indicate Social Exp. Pushed HDI

वैश्विक स्तर पर HDI :

रिपोर्ट में जिन 189 देशों की मानवी विकास की गणना की गई है उसमें **बहुत उच्च मानवी विकास** जिसका HDI मूल्य 0.8 से ज्यादा है – वाले देश की संख्या 59, **उच्च मानवी विकास** जिसका HDI मूल्य 0.799 से 0.7 के बीच है – वाले देश की संख्या 53, **मध्यम मानवी विकास** जिसका HDI मूल्य 0.699 से 550 के बीच है – वाले देश की संख्या 39 एवं **निम्न मानवी विकास** वाले देश जिसका HDI मूल्य 0.549 से नीचे है – संख्या 38 है।

वैश्विक स्तर पर HDI

Country	Rank 2017	HDI 1990	HDI 2017
Norway	1	0.850	0.953
Switzerland	2	0.832	0.944
Hong Kong	7	0.781	0.933
Singapore	9	0.718	0.932
UAE	34	0.722	0.863
Saudi Arabia	39	0.697	0.853
Argentina	47	0.704	0.825
Russia	49	0.734	0.816
Malaysia	57	0.643	0.802
Turkey	64	0.579	0.791
Sri Lanka	76	0.625	0.770
Brazil	79	0.611	0.759
Thailand	83	0.674	0.755
China	86	0.502	0.752
South Africa	113	0.618	0.699
Indonesia	116	0.528	0.696
India	130	0.427	0.640
Myanmar	148	0.378	0.574
Nepal	149	0.378	0.572
Pakistan	150	0.404	0.562

Source- UNDP, SBI Research

निष्कर्ष :

अध्ययन से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि –

- 1990 से 2017 के बीच औसत विश्व का HDI 22 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है इसी दौरान विकासशील देशों में यह वृद्धि 51 प्रशित तक हुई है। इस बात का संकेत है कि दुनिया के लोगों का जीवन–स्तर–रहन सहन में सुधार हो रहा है हालाकि आज भी विकसित एवं विकासशील देशों के बीच जीवन स्तर में बहुत अन्तर है।
- 2017 में भारत का एचडीआई मूल्य (0.640) दक्षिण एशिया के औसत 0.638 से थोड़ा सा ऊपर है। भारत के पड़ोसी देशों बांग्लादेश और पाकिस्तान के एचडीआई मूल्य क्रमशः 0.608 और 0. 562 है। बांग्लादेश की रैकिंग जहाँ 136 है, वहीं पाकिस्तान की रैकिंग 150 है।

- भारत में 1990 से 2017 के मध्य मानव विकास में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि लाखों लोगों को गरीबी के दलदल से निकालने की भारत की उल्लेखनीय उपलब्धि मानव विकास योजनाएं, गरीबी उन्मूलन, स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, मेक इन इण्डिया का काफी योगदान रहा है।
- मानव विकास निम्नतम देशों के निवासियों की तुलना में उच्चतम स्तर वाले देशों के निवासी 19 वर्ष अधिक जीते हैं और स्कूल में 7 वर्ष अधिक व्यतीत करते हैं।
- वर्ष 1990 से 2017 के मध्य भारत में जीवन प्रत्याशा लगभग 11 वर्ष बढ़ी है।
- वर्ष 1990 से 2017 के मध्य भारत की सकल राष्ट्रीय आय (GNI) प्रति व्यक्ति 266.6 प्रतिशत बढ़ी है।
- भारत में जीवन प्रत्याश–68.8 वर्ष
- भारत में विद्यालय जाने के अनुमानित वर्ष–12.3 वर्ष
- भारत के पड़ोसी देशों में श्रीलंका (76वां), चीन (86वां) व मालदीव (101वां स्थान) की स्थिति भारत से बेहतर है।
- जबकि भूटान (134वां), बांग्लादेश (136वां), नेपाल (149वां) तथा पाकिस्तान (150वां स्थान) की स्थिति भारत से बेहतर है।
- भारत में असमानता अब भी इसके विकास की राह में बड़ी चुनौती बनी हुई है। इसके मुताबिक असमानता की वजह से भारत के HDI वैल्यू को 26.8 प्रतिशत का नुकसान हुआ है।

अतः और बेहतर के लिए सामाजिक क्षेत्र स्वास्थ्य और शिक्षा में भारी विनियोग करना होगा जिससे देश में कुशल श्रमशक्ति और उत्पादिकता बढ़ सके।, इसके लिए आवश्यक है कि राष्ट्र स्तर पर सामाजिक कार्यक्रम व सेवाओं, राष्ट्रीय स्तर पर क्षमताओं का निर्माण, कार्य प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सुविधा, महिला सशक्तीकरण, मेक इन इण्डिया इन सभी को बेहतर बनाना होगा।

संदर्भ

1. Choice Welfare & Measurement, Amartya Sen
2. Social Choice Theory, Amartya Sen
3. Human Development Report
4. Economic Survey of India
5. Indian Economic & Political Weekly
6. गरीबी और अकाल – अमर्त्य सेन
7. योजन–नई दिल्ली
8. भारतीय अर्थव्यवस्था, रुद्र दत्त एवं सुन्दरम – एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली
9. UNDP रिपोर्ट
10. ECOWARP- SBI